महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद्
Mahatma Gandhi National Council of Rural Education
उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

द रुरल कनेक्ट

खंड 02 अंक 4
अक्टूबर 2022

राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता शिक्षकों ने राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचे के लिए प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिए विचार-मंथन किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुवर्तन के रूप में, चार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचे (एन.सी.एफ.) को बॉटम-अप दृष्टिकोण का उपयोग करके विकसित किया जा रहा है, जिसमें राज्य और केंद्र शासित प्रदेश भी एन.सी.एफ. के लिए इनपुट प्रदान करने में शामिल हैं। एन.सी.एफ. के चार क्षेत्र हैं - स्कूली शिक्षा, बचपन की देखभाल और शिक्षा, शिक्षक शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा। एन.सी.ई.आर.टी. ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति की कुछ प्रमुख सिफारिशों पर इस बातचीत का नेतृत्व किया, जैसे नई पाठ्यक्रम और शैक्षणिक संरचना 5+3+3+4, बहुभाषी शिक्षा, समग्र मूल्यांकन और नवीन शिक्षाशास्त्र का कार्यान्वयन।

मिजोरम के माननीय राज्यपाल डॉ. हरि बाबू कंभमपति ने एम.जी.एन.सी.आर.ई. के एफ.डी.पी. के हिस्से के रूप में ग्रामीण तल्लीनता कार्यक्रम में गहरी रुचि दिखाई।

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है"। *प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने शिक्षक दिवस पर राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता शिक्षकों के साथ बातचीत करते हुए कहा। उन्होंने कहा, "भारत के वर्तमान राष्ट्रपति जो एक शिक्षक भी हैं, उनका अभिनंदन करना और भी महत्वपूर्ण है।" इसके अलावा, उन्होंने कहा, "एक शिक्षक की भूमिका एक व्यक्ति को प्रकाश दिखाना है, और यह वही है जो सपनों को बोता है और उन्हें सपनों को संकल्प में बदलना सिखाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति को आत्मसात करने और इसे छात्रों के जीवन का आधार बनाने की जरूरत है। उन्हें राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2022 के कार्यान्वयन के लिए मौजूदा सरकारी स्कूलों को मॉडल स्कूलों में बदलने के लिए* ***पीएम स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया' (पीएम - श्री)*** *योजना पर भी भरोसा रहा।*

"शिक्षा से रोजगार – इसे संभव बनाना"

आज 15-25 आयु वर्ग की विशाल आबादी को शिक्षित और कौशल बनाना चुनौती रहा है। . . .

केंद्रीय शिक्षा मंत्री और कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री, श्री धर्मेंद्र प्रधान ने शिक्षा और कौशल क्षेत्र में और परिवर्तन लाने के लिए एक मजबूत शिक्षा-उद्योग-नीति निर्माता को जोड़ने और सामूहिक दृष्टिकोण के साथ काम करने का आह्वान किया। उन्होंने जनसांख्यिकीय लाभांश प्राप्त करने और भारत के कौशल पारिस्थितिकी तंत्र को और अधिक जीवंत बनाने के लिए कौशल का लाभ उठाने पर अपने विचार साझा किए। श्री प्रधान ने नई दिल्ली में 13वें एफ.आई.सी.सी.आई. ग्लोबल स्किल्स समिट 2022 को संबोधित करते हुए कहा कि श्रम कानूनों का सरलीकरण और शिक्षुता जैसी पहल हमारे कार्यबल को और अधिक जीवंत बनाने में एक लंबा सफर तय करेगी। भारतीय सभ्यता हमेशा से ज्ञान आधारित और ज्ञान संचालित रही है। इसे आगे बढ़ाते हुए, भारत एन.ई.पी. 2020 को लागू कर रहा है। *(स्रोत: pib.gov.in)*

एम.जी.एन.सी.आर.ई.-स्किलिंग कनेक्ट!

शिक्षण पद्धति के साथ संकाय को सशक्त बनाने के लिए कार्य योजना

एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने व्यावसायिक शिक्षा, अनुभवात्मक शिक्षा और कौशल पर पांच राष्ट्रीय कार्यशालाओं को जोरदार प्रतिक्रिया और उत्साहजनक परिणामों के साथ सफलतापूर्वक समर्पित है। ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण जुड़ाव पर पांच राष्ट्रीय कार्यशालाएं और सामुदायिक व्यस्तता पर एक कार्यशाला भी पहले पाठ्यचर्या सुधारों पर जोर देते हुए आयोजित की गई थी। विषय पद्धति द्वारा शिक्षक शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा पर एम.जी.एन.सी.आर.ई. की आगामी 3-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला (17-19 अक्टूबर) का उद्देश्य भारत के सभी राज्यों में राज्य शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.) के साथ मिलकर व्यावसायिक शिक्षा और कौशल घटक को एकीकृत करके शिक्षक शिक्षा में पाठ्यक्रम को फिर से तैयार करना है। शिक्षा शिक्षक शिक्षा संस्थानों को अनुभवात्मक शिक्षा, कौशल और व्यावसायिक शिक्षा पद्धतियों को शामिल करने के लिए अपने पाठ्यक्रम को मजबूत करने की आवश्यकता होगी। यह उन शिक्षक प्रशिक्षुओं को कौशल बनाने में सक्षम होगा जिन्हें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सुधारों को लागू करने वाले स्कूलों में काम करने के लिए तैयार किया जा रहा है।

संपादक की टिप्पणी

शिक्षक राष्ट्र का निर्माण करते हैं, और इस पर अधिक जोर नहीं दिया जा सकता है। छात्र अपने द्वारा सिखाई गई पाठ्यपुस्तकों से अधिक मूल्यों को शिक्षकों से सीखते हैं। वे मूल्य प्रणालियों के प्रतीक हैं जो राष्ट्र निर्माण में अत्यधिक योगदान दे सकते हैं। शिक्षक दिवस के अवसर पर, मैं सभी शिक्षकों को शुभकामनाएं देता हूँ और छात्रों के जीवन को ढालने में उनकी भूमिका की सराहना करता हूँ। डॉ. सर्वेपल्ली राधाकृष्णन भारत के प्रतीक हैं, जो प्राचीन और आधुनिक, और धर्मनिरपेक्ष और आध्यात्मिक दोनों है। उन्होंने सभी संस्कृतियों का प्रतीक किया और पूर्व और पश्चिम के बीच समझ का एक सेतु बनाने का प्रयास किया।

रोजगार के लिए छात्रों की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए शिक्षक शिक्षा को पुनर्विन्यास की आवश्यकता है। भारत को कौशल बनाने की आवश्यकता को बढ़ाते हुए, एम.जी.एन.सी.आर.ई. शिक्षक-शिक्षा पाठ्यक्रम में अनुभवात्मक शिक्षा, कौशल, व्यावसायिक शिक्षा और सामुदायिक व्यस्तता गतिविधियों को शामिल करने के लिए अपनाई जाने वाली रणनीतियों और पद्धतियों के लिए जोरदार संघर्ष कर रहा है। एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने हाल ही में एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में व्यावसायिक शिक्षा, अनुभवात्मक शिक्षा और कौशल पर 5 राष्ट्रीय कार्यशालाएँ आयोजित की हैं और चार आर.आई.ई. में संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी., संयुक्त निदेशक पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. और आर.आई.ई. के चुनिंदा संकायों ने बहुत उत्साहजनक परिणामों के साथ भाग लिया।

विषय पद्धति द्वारा शिक्षक शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा पर आगामी 3 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से कौशल निर्माण, विषय (विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित, भाषा) द्वारा शिक्षण कौशल सीखने, उद्यमिता को समझने जैसे पथ-प्रदर्शक परिणाम होने की उम्मीद है। आय सृजन मॉडल, अनुभवात्मक शिक्षा को विकसित करना, पाठ्यक्रम में सुधार लाना और पाठ्यक्रम में व्यावसायिक कौशल को लागू करना।

सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक व्यस्तता के लिए सुविधा के बारे में संकाय विकास कार्यक्रम इस महीने पूरे किए गए एफ.डी.पी. के साथ पूरे जोरों पर चल रहे हैं। मैं दोहराता रहा हूँ कि एम.जी.एन.सी.आर.ई. एक कार्यप्रणाली संगठन है, एक अनुभवात्मक शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा संगठन है। हम चाहते हैं कि हमारे कार्यक्रमों में भाग लेने वाले सीखें कि कैसे सीखना है। हम ज्ञान नहीं देते। अगर वे सीखना सीखते हैं, तो वे सीखते और अपडेट करते रह सकते हैं। जब वे गाँव के दौरे पर जाते हैं, तो वे गाँव के बारे में नहीं सीख रहे हैं और न ही गाँव को पढ़ा रहे हैं। वे गांव से सीख रहे हैं। वे सीख रहे हैं कि समुदाय से कैसे सीखना है क्योंकि समुदाय ही समुदाय सीख रहा है।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. अब स्व-वित्तपोषित सामाजिक उद्यमिता स्थिरता और ग्रामीण जुड़ाव प्रकोष्ठों (एस.ई.एस.आर.ई.सी.) के गठन के माध्यम से सामाजिक कार्य संस्थानों में सामाजिक उद्यमिता अनुभवात्मक शिक्षा के लिए शैक्षणिक संकाय विकास इनपुट प्रदान करने में रुचि रखता है। एस.ई.एस.आर.ई. प्रकोष्ठों के अकादमिक इनपुट को शुरू में उन जिलों में प्रस्तावित किया गया है जहां एक से अधिक सामाजिक कार्य संस्थान हैं। आगे जाकर, एम.जी.एन.सी.आर.ई. उनके साथ संकाय विकास, अनुसंधान, इंटर्नशिप और सामुदायिक व्यस्तता गतिविधियों के लिए संलग्न होगा। हम या तो इन प्रकोष्ठों के साथ एफ.डी.पी. के माध्यम से उनके प्रभावी प्रदर्शन को मजबूत करने के लिए काम करेंगे या उन संस्थानों में ऐसे सेल बनाएंगे जो हमारे एफ.डी.पी. में भाग लेते हैं।

पाठ्यक्रम पर .....

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार, अस्तित्व तीन प्रकार का होता है - प्राकृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक। ये परस्पर संबंधित हैं। शिक्षण की सामग्री को तदनुसार तीन समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी का संबंध प्रकृति से हमारे संबंधों से है। सामाजिक विज्ञान समाज और उसके दर्शन के साथ हमारे संबंधों से संबंधित है। कला और साहित्य का संबंध मूल्यों या आत्मा की दुनिया से हमारे संबंध से है। विभिन्न अध्ययनों को समग्रता के भागों के रूप में माना जाना चाहिए। डॉ. राधाकृष्णन कहते हैं कि ज्ञान के घर को अपने आप में विभाजित नहीं किया जा सकता है और इसलिए, यह सोचना बेकार है कि विज्ञान हमें एक विशेष ज्ञान देता है, कला दूसरा देती है, और साहित्य एक और देता है। यह एक विशेष आध्यात्मिक दिशा के साथ एक अविभाज्य संपूर्ण है।

डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार
अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई.

मैं शिक्षक दिवस के अवसर पर सभी शिक्षकों को बधाई देता हूँ। समाज के लिए उनकी महत्वपूर्ण सेवा अपूरणीय है। जैसा कि डॉ. सर्वेपल्ली राधाकृष्णन कहते हैं - "एक शिक्षक को छात्रों को अपना सर्वश्रेष्ठ देना होता है। सबसे ज्यादा जोर शिक्षा की गुणवत्ता देने जाने पर रखना होगा। अन्य सभी विचारों का दूसरा स्थान होना चाहिए। इसमें यदि किसी प्रकार का समझौता किया जाता है तो परिणाम विनाशकारी हो सकता है। गुणवत्ता के साथ छेड़छाड़ का मतलब होगा शिक्षा के स्तर को कम करना। शिक्षा न केवल व्यापक होनी चाहिए, बल्कि गहरी भी होनी चाहिए। गुणवत्ता और गहराई की कमी नहीं होनी चाहिए, शिक्षा की व्याख्या वियोजित की गई जानकारी के संकलन या विचलित करने वाले स्क्रैप के संग्रह के रूप में नहीं की जा सकती है।"

शिक्षक शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा को एकीकृत करके कौशल को बढ़ावा देने की अब एक आसन्न आवश्यकता है। आगामी राष्ट्रीय सम्मेलन इन क्षेत्रों पर प्रकाश डालेगा और हम कुछ महान सक्रिय परिणामों की आशा करते हैं। यह दुखद है कि वर्तमान में प्रत्येक 1000 रोजगार में 998 जानकार और 2 कौशल हैं। हमें 998 कौशल और 2 जानकार चाहिए। बेरोजगारी और बेरोजगारी के कारण बेरोजगारी के पीछे यही तिरछापन है। इसलिए हमारे एफ.डी.पी. कौशल की ओर उन्मुख होते हैं न कि ज्ञान की ओर। एफ.डी.पी. के हिस्से के रूप में गांव का दौरा ग्रामीण पर्यटन नहीं है बल्कि एक शानदार सीखने और बातचीत का अवसर है।

डॉ. भरत पाठक
उपाध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई.

देश भर में उच्चतर शैक्षणिक संस्थानों के स्थिरता मानकों का आकलन करने के लिए एम.जी.एन.सी.आर.ई. इंटर्न्स द्वारा संस्थागत दौरे।

संकाय विकास कार्यक्रम

'सामाजिक उत्तरदायित्व का मार्गदर्शन करना और सामदायिक व्यस्तता के लिए सविधा'

एन.आई.टी. श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर
26 सितंबर - 1 अक्टूबर

03 Asian Express SRINAGAR - SUNDAY, OCT 02, 2022 NEWS

Six-day long Faculty Development Programme concludes at NIT Srinagar

UBA is inspired by the vision of transformational change in rural development: Prof. Harmain

SRINAGAR OCT 01: The Six-day long Faculty Development Program (FDP) on Social Commitment and Evaluating Impact in Community - Institution Engagement concluded on Saturday at National Institute of Technology (NIT) Srinagar.

The FDP was organized by the Faculty Development Centre Mahatma Gandhi National Council of Rural Education Department of Higher Education (MGNCRE), Ministry of Education GOI, in collaboration with Regional Coordinating Institute, Unnat Bharat Abhiyan (UBA) NIT Srinagar.

The valedictory ceremony was presided over by Prof. G.A. Harmain, Professor, HAG, Department of Mechanical Engineering, NIT Srinagar, who was the Chief Guest on the occasion.

Addressing the participants, Prof. Harmain said Unnat Bharat Abhiyan is inspired by the vision of transformational change in rural development processes by leveraging knowledge institutions to help build the architecture of an inclusive India.

"The mission of this program is to enable higher education institutions to work with the people of rural India in identifying development challenges and evolving appropriate solutions for accelerating sustainable growth," he said.

Prof M.F Wani, RCI-UBA Coordinator, Dean, R&C, NIT Srinagar said briefed about the activities of UBA in the region and highlighted the theme of the FDP.

Mentoring Institutional Social Responsibility and facilitation for community engagement.

He said the main goal of UBA is to foster a new dialogue within the larger community on science, society, and the environment and to develop a sense of dignity and collective destiny.

In his message, Director NIT Srinagar, Prof. (Dr) Rakesh Sehgal said the main aim of this FDP was to invite faculty from across the country that are keen to bring innovative changes in their respective organizations through leadership skills.

"The main aim of UBA is to create a virtuous cycle between society and an inclusive academic system by providing knowledge and practices for emerging professions," he said.

Institute Registrar, Prof. Javid Ahmad Bukhari said the mission of such programs is to enable higher educational institutions to work on the ground level in identifying development challenges and evolving appropriate solutions for accelerating sustainable growth.

"There are huge developmental disconnects between the rural and urban sectors and we need to bridge that gap," he said adding that NIT Srinagar will continue to support such programs on campus, so that everyone will benefit from these initiatives.

Addressing the gathering, Mr. Sudheer Kumar, MGNCRE FDP Coordinator, Hyderabad said by linking work and education has earned MGNCRE the prestigious UNESCO Chair on experiential learning, work, education, and community engagement." We have recognized, certified, and awarded 400 Higher Education Institutions with District Green Champion Awards as part of its Swachhta Action Plan activities. The Council seeks to usher in rural change and inclusive growth in India as a catalyst organization," he said.

Mr. Kumar expressed his gratitude to Director NIT Srinagar, Prof. Sehgal, Prof. M.F. Wani, RCI-UBA Coordinator, Dean (R&C), and Registrar NIT Srinagar Prof. Bukhari for their unconditional support during the FDP.

In his welcome address, Coordinator of FDP, Dr. Tanveer Kausel briefed about the Unnat Bharat Abhiyan Scheme and Mentoring Institutional Social Responsibility and facilitation for Community Engagement.

Dr. Leela Manohar Arshala, Asst. Prof and Dr. Tanveer Kausel, Asst. Prof from Department of Chemical Engineering were the coordinators of the event.

Chief Guest, Prof. G.A. Harmain, RCI-UBA Coordinator, Dean (R&C), Prof. M.F. Wani, Sh. Sudheer Kumar, MGNCRE FDP Coordinator, Dr. Shankar Rao, Dr. Tanveer Kausel, and Dr. Leela Manohar were felicitated with the mementos in the valedictory ceremony.

Later certificates were distributed to participants and student volunteers by the organizers.

About 23 delegates from across the country participated in the FDP While students from the 3rd semester Chemical Engineering department actively volunteered in the program.

The valedictory ceremony was concluded by Assistant Prof. Dr. Leela Manohar by presenting a vote of thanks to the dignitaries and guests.

He expressed his gratitude to Chairman MGNCRE, Dr. M.G. Prasanna Kumar, Director NIT Srinagar, Prof. M.T. Wani, and Institute's Registrar, Prof. Bukhari for supporting the mega FDP at NIT Srinagar.

"इस एफ.डी.पी. का विषय दिलचस्प है क्योंकि इसका विषय वर्तमान परिदृश्य में अधिक प्रासंगिक है" **श्री इमाम दीन (जे.के.ए.एस.),** निदेशक, ग्रामीण विकास कश्मीर, ने एन.आई.टी. श्रीनगर के एफ.डी.पी. प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा। उन्होंने दूर-दराज के गांवों और शैक्षणिक संस्थानों को गोद लेने और महान प्रगतिशील कार्य करने के लिए यू.बी.ए. आर.सी.आई. एन.आई.टी. श्रीनगर की भी सराहना की।

डीन रिसर्च एवं कंसल्टेंसी (आर एवं सी) और क्षेत्रीय समन्वयक यू.बी.ए., **प्रो. एम.एफ. वानी** छह दिवसीय एफ.डी.पी. के संयोजक थे। उद्घाटन कार्यक्रम में एन.आई.टी. श्रीनगर के रजिस्ट्रार प्रो. सैयद कैसर बुखारी विशिष्ट अतिथि थे। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. लीला मनोहर ऐशला, सहायक प्रोफेसर और डॉ. तनवीर रसूल, सहायक प्रोफेसर केमिकल इंजीनियरिंग विभाग के थे। निदेशक एन.आई.टी. श्रीनगर, प्रो. (डॉ.) राकेश सहगल ने कहा कि यू.बी.ए. का लक्ष्य उच्चतर शिक्षा संस्थानों के भीतर विकास के एजेंडे की समझ बनाना है। "मुझे उम्मीद है कि यह एफ.डी.पी. विभिन्न पहलुओं और चुनौतियों पर चर्चा करेगी और कुछ ठोस समाधान खोजने की कोशिश करेगी। तब इन समाधानों को मूल स्तर पर लागू किया जा सकता है, "प्रो. सहगल ने कहा। प्रो. वानी ने कहा, "संस्थागत और संगठनात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने में संकाय का मार्गदर्शन एक लंबा सफर तय करेगा। उच्चतर शिक्षा मानव जाति के कल्याण के लिए ज्ञान पैदा करने के लिए जिम्मेदार है।" प्रो. वानी ने सभी पी.आई. समन्वयकों को केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर में यू.बी.ए. की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। रजिस्ट्रार, प्रो. सैयद कैसर बुखारी ने कहा, "सभी सत्र प्रतिभागियों के लिए बेहद फायदेमंद हैं" और भारत के ग्रामीण लोगों और शैक्षणिक संस्थानों के बीच की अंतर को भरने में यू.बी.ए. की भूमिका पर जोर दिया। एम.जी.एन.सी.आर.ई. के अध्यक्ष डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार ने कहा (ऑनलाइन मोड) "एम.जी.एन.सी.आर.ई. ग्रामीण उच्चतर शिक्षा पाठ्यक्रम और गांधीवादी दर्शन और ग्रामीण जुड़ाव से संबंधित मुद्दों पर एफ.डी.सी. एम.जी.एन.सी.आर.ई. के माध्यम से इसे संचालित करने वाले संकाय सदस्यों को मजबूत करना चाहता है।" उन्होंने कहा कि एफ.डी.सी. एम.जी.एन.सी.आर.ई. अब भारत सरकार के लिए एक सलाहकार इंटरफेस और एक पाठ्यक्रम विकास एजेंसी है और इसने देश भर में उच्चतर शिक्षा संस्थानों के साथ पाठ्यक्रम, मैनुअल, पाठ्यपुस्तक, और नेटवर्किंग विकसित करने और संलग्न करने जैसी महत्वपूर्ण पहल की है।

अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए

***जम्मू और कश्मीर के ननिबुग कुलगाम गांव** में ट्रांज़ेक्ट वॉक के दौरान बातचीत की है*

*गांवों में स्वच्छता और सफाई, अपशिष्ट प्रबंधन, ऊर्जा प्रबंधन, जल प्रबंधन और हरियाली के स्थिरता पहलुओं पर **गुटलीगुंड** गांव में टीमवार फील्ड इंटरेक्शन।*

एन.आई.टी. कुरुक्षेत्र, हरियाणा
19-24 सितंबर

एन.आई.टी. कुरुक्षेत्र में एफ.डी.पी. पद्म विभूषण प्रो. विजय पी. भाटकर, चांसलर, नालंदा विश्वविद्यालय, बिहार, यू.बी.ए. के राष्ट्रीय संचालन समिति के प्रमुख द्वारा

आयोजित किया गया था। उन्होंने ग्रामीण समाज के विकास के लिए अपने संबंधित संस्थानों में प्रतिभागियों को यहां प्राप्त ज्ञान और अनुभव की योजना बनाने और निष्पादित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रो. एस.एन. सचदेवा (वी.सी., के.यू.के.), प्रो. बी.वी. रमण रेड्डी (निदेशक, एन.आई.टी. कुरुक्षेत्र), प्रो. बलदेव कुमार (वी.सी., एस.के.ए.यू., कुरुक्षेत्र) प्रमुख वक्ता थे। सत्र पर्यावरणीय स्थिरता पर केंद्रित थे। सरस्वती नदी का पुनरुद्धार, किसी व्यक्ति की आत्मनिर्भरता में आयुर्वेदिक उत्पादों की प्रासंगिकता, आयुर्वेदिक उत्पादों के उत्पादन का कौशल, कल्याण में सुधार, और भारत के ग्रामीण विकास में आयुर्वेद प्रणालियों की भूमिका कुछ प्रमुख विषय क्षेत्र थे। प्रख्यात संसाधन व्यक्तियों ने प्राचीन भारतीय ज्ञान के

अभिसरण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता के महत्व, फैसिलिटेटरों की भूमिका और प्रभावी सलाह पर भी

यू.जी.सी. एच.आर.डी.सी. मिजोरम विश्वविद्यालय, आइजोल, मिजोरम
9-23 सितंबर

एफ.डी.पी. के मुख्य अतिथि प्रो. लालनुंडंगा, रजिस्ट्रार, एम.जेड.यू. थे। स्वागत भाषण कार्यक्रम के संयोजक प्रो. के. रॉबिन, निदेशक, एम.जेड.यू. ने प्रस्तुत किया। प्रो. ई. कनगराज, सामाजिक कार्य विभाग, डॉ. आइरीन लालरुआत्किमी, प्रमुख, जन संचार विभाग, डॉ. हेनरी जोडिनिलियाना पचुआउ, सहयोगी प्रो., सामाजिक कार्य विभाग, डॉ. सी. लालेंगज़ामा, सहायक प्रो., सामाजिक कार्य विभाग, डॉ. ग्रेस लालहलुपुई सैलो, सहायक प्रो., सामाजिक कार्य विभाग, श्री रिनजुआला, प्रबंध निदेशक, मिज़ोफेड, डॉ. बेंजामिन एल. सैतलुआंगा, सहयोगी प्रो., भूगोल विभाग, डॉ. के.सी. लालमलसावमज़ौवा, एसो। प्रोफेसर, भूगोल विभाग, डॉ. बी. लालजारलियाना, समाजशास्त्र विभाग के सहायक प्रो. प्रमुख वक्ता थे। मिजोरम में ममित जिले के रीक अनुमंडल में स्थित रीक गांव का दौरा किया गया। ट्रांज़ेक्ट वॉक, सोशल मैपिंग, पी.आर.ए. और एस.एच.जी. के साथ फोकस्ड ग्रुप डिस्कशन कुछ प्रमुख गतिविधियां थीं।

बात की। पांच टीमों - स्वच्छता और सफाई, अपशिष्ट प्रबंधन, जल प्रबंधन, ऊर्जा प्रबंधन और हरियाली और वृक्षारोपण के गठन के द्वारा क्षेत्र का दौरा किया गया था।

गांव का क्षेत्र दौरा

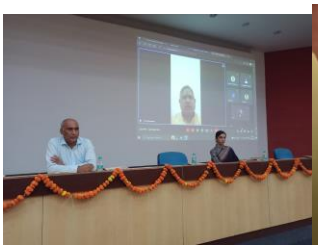

त्रिपुरा विश्वविद्यालय, अगरतला, त्रिपुरा
29 सितंबर-3 अक्टूबर

श्रीमती विश्वश्री बी, आई.ए.एस., जिला मजिस्ट्रेट और कलेक्टर सिपाहीजाला, त्रिपुरा ने एफ.डी.पी. में भाग लिया। उन्होंने सहकारी बैंक, सहकारी दुग्ध उत्पादन जैसी ग्रामीण संस्थाओं पर एक बहुत ही आकर्षक और ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। उन्होंने सभी के लिए वार्ड सभा और ग्राम सभा में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित किया। उन्होंने स्थानीय आबादी द्वारा सभी स्थानीय मुद्दों पर काम करने और प्रभावी और सतत ग्रामीण विकास लाने के लिए समाज के हर हिस्से के साथ मिलकर काम करने पर जोर दिया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रो. गंगा प्रसाद प्रसेन, माननीय कुलपति, त्रिपुरा विश्वविद्यालय ने किया। प्रो. बादल कुमार दत्ता (निदेशक), प्रो. अजय कृष्ण साहा (उप निदेशक) और प्रो. बिनोद चंद्र त्रिपाठी (समन्वयक), संकाय विकास केंद्र, त्रिपुरा विश्वविद्यालय की उपस्थिति में त्रिपुरा राज्य के विभिन्न कॉलेजों और घटित संस्थानों के कुल 42 संकाय सदस्यों ने एफ.डी.पी. में भाग लिया।

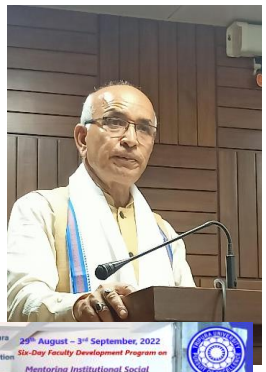

एफ.डी.पी. के तीसरे दिन सूरजमणिनगर ग्राम पंचायत का दौरा किया गया।

सामुदायिक भागीदारी के साथ पी.आर.ए. के माध्यम से गांव की ग्रामीण स्थिति को समझने के लिए चेसरीमाई गाओ पंचायत में एक फील्ड ट्रिप आयोजित की गई थी। इस टीम ने देखा कि ग्रामीणों में 809 परिवार शामिल थे, जो ज्यादातर कृषि गतिविधियों पर निर्भर थे, जिसमें रबर प्लांटेशन और पशुधन व्यवसाय शामिल थे। रंगपनिया नदी गाँव की उपजाऊ भूमि की सिंचाई प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अपनी उपजाऊ भूमि का इष्टतम उपयोग और उत्पादकता सुनिश्चित करने के लिए, वे विभिन्न प्रकार के धान (काला खासा, गोमती, स्वर्णमासुरी और रंजीत पायजाम आदि) और विभिन्न मौसमी सब्जियां जैसे लौकी, कंटोला, करेला, कद्दू, लंबी बीन्स, आलू, मिर्च आदि की खेती करते पाए जाते हैं। सदस्यों ने यह भी देखा कि गांव में एक स्वच्छ वातावरण बनाए रखा और एक फूल बुटीक उद्यान बनाने और ग्रामीण के साथ-साथ पर्यावरण पर्यटन को बढ़ावा देने की क्षमता थी।

असम विश्वविद्यालय, सिलचर, असम

5-10 सितंबर

एफ.डी.पी. के प्रमुख परिणाम यह थे कि प्रतिभागी अधिक सक्रिय हो गए और चर्चाओं और कार्य योजनाओं में भाग लिया; उन्होंने समुदायों के साथ काम करने की भावना पैदा की है; और उन्होंने अपने कॉलेज और आसपास के गांवों के लिए उपयुक्त कार्य योजनाएँ बनाई हैं। एफ.डी.पी. का उद्घाटन असम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजीव मोहन पंत ने किया, जिन्होंने अपने भाषण में महात्मा गांधी के शब्दों "भारत गांवों में रहता है" का हवाला दिया। उन्होंने कहा कि अधिकांश लोग ग्रामीण भारत में रह रहे हैं। गांव सभी के लिए पैतृक जड़ है, यहां तक कि शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए भी। उन्होंने राष्ट्र के विकास के लिए सामुदायिक व्यस्तता में शिक्षकों की भागीदारी पर जोर दिया। प्रो. पंत ने कहा कि स्मार्ट होने के लिए गांवों में समृद्धि, मनोरम, आत्म निर्भार, राष्ट्र नीति, तकनीति जैसे गुण होने चाहिए। इन गुणों के अलावा गांवों को बुनियादी सुविधाओं की आपूर्ति, सामाजिक और आर्थिक विकास, मानव विकास और एक प्राप्य भविष्य के लिए सतत विकास लक्ष्यों के क्षेत्र में भी विकसित होना चाहिए। इन्हें समझाते हुए, उन्होंने कुछ सफलता की कहानियों का उल्लेख किया जो पुंसरी गांव, मावलिननॉन्ग गांव, सौंहलिया और रतियांग, जुमसा गांव, मनीराम फलीधारा और अंत में अरुणाचल प्रदेश के शेरगांव में स्थित हैं। इन गांवों ने सामान्य लोगों के दिमाग और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए कुछ अनूठी पद्धतियां अपनाई हैं। उन्होंने यह कहते हुए निष्कर्ष निकाला कि गांवों में स्मार्टनेस अब मिराज नहीं होगी और ग्रामीण भारत में प्रकाश जीवन विकास और विकास के फल सुनिश्चित करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता पर काम कर रहा है।

टीम ने फील्ड विजिट के तहत रोजकंडी और बोरजालेंगा गांवों का दौरा किया। ग्रामीणों द्वारा साझा की गई जानकारी, जलवायु की स्थिति और क्षेत्र की स्थलाकृति के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बोरजालेंगा के ग्रामीणों का कृषि गतिविधि और उसका परिणाम प्राप्त करने के संबंध में बहुत कम प्रदर्शन किया गया है।

नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी (एन.ई.एच.यू.), शिलांग, मेघालय

12-17 सितंबर

प्रो. प्रभा शंकर शुक्ला, कुलपति, एन.ई.एच.यू. मुख्य अतिथि थे। स्वागत भाषण कार्यक्रम के संयोजक प्रो. बी.पी. साहू, प्रमुख, सी.डी.ई., एन.ई.एच.यू., शिलांग ने दिया। इसके बाद प्रो. भागीरथी पांडा, निदेशक, आई.सी.एस.एस.आर. (एन.ई.आर.) का उद्घाटन भाषण हुआ। मुख्य भाषण प्रो. हितेंद्र के. मिश्रा, निदेशक, यू.जी.सी.-एच.आर.डी.सी., एन.ई.एच.यू., शिलांग ने दिया। प्रो. आर.एन. राय, सेंटर फॉर डिस्टेंस एजुकेशन, एन.ई.एच.यू., शिलांग द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। प्रो. शुक्ल ने आनंदमय शिक्षा के बारे में बताया जो

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) के अनुरूप है। उन्होंने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के महत्व के बारे में भी उल्लेख किया, कि शहरी और ग्रामीण के बीच अंतर की पहचान करना एच.ई.आई. के रूप में हमारा कर्तव्य है। उन्होंने एच.ई.आई. को उद्यमशीलता का रवैया विकसित करने और छात्रों को समाज में योगदान करने के लिए अपने कौशल और ज्ञान को विकसित करने के लिए पहल करने के लिए प्रोत्साहित किया।

फील्ड विजिट: मावबर विलेज, ईस्ट खासी हिल्स, मेघालय (शिलांग से 35 कि.मी.)।

मावबर एक मध्यम आकार का गाँव है जो मेघालय के पूर्वी खासी हिल्स जिले के मावरिंगकेंग ब्लॉक में स्थित है। यह उप-जिला मुख्यालय मावरिंगकनेंग (तहसीलदार कार्यालय) जिला मुख्यालय शिलांग से 75 कि.मी. दूर स्थित है।

प्रतिभागियों ने सुदूर गांव के लोगों के रूप में नाटक में भाग लिया। कृषि समूह ने भूमि लगान, पौधे के कीट संक्रमण की समस्या, अपनी भूमि से बाजार तक उत्पादन के परिवहन पर विभिन्न प्रभाव, गाँव में खाद्य भंडारण की कमी, उचित सड़क निर्माण नहीं, ज्ञान की कमी के मुद्दों के बारे में अपनी समस्याएं प्रस्तुत कीं। रोपण के संबंध में भूमि का उपयोग कैसे करें, जो अंततः भारी बारिश के कारण मिट्टी के कटाव की ओर जाता है, खासकर बरसात के मौसम में, सरकार की योजनाओं से अवगत नहीं है। इस प्रकार ग्राम प्रशासन ने उनकी याचिकाओं को सुना है, और अन्य समूहों से सुनवाई के बाद मामलों पर चर्चा करने का निर्णय लिया है। स्वास्थ्य प्रशासन द्वारा गठित लोगों ने स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को लेकर हार्दिक संवेदना व्यक्त की। इसलिए, नाटक की भूमिका में बैठक को समाप्त करने से पहले, ग्राम प्रशासन ने नाटक की भूमिका में ग्रामीण लोगों के रूप में काम करने वाले लोगों के लिए उचित समाधान प्रदान करने का निर्णय लिया, साथ ही बैठक को बी.डी.ओ. और अन्य जिले के अधिकारियों को मामला के सुझाव के साथ समाप्त किया।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
वर्धा, महाराष्ट्र
12-17 सितंबर

भारत को बनाने के लिए समुदाय की जरूरतों को फिर से परिभाषित करने और पुनर्गठन की सख्त जरूरत है क्योंकि श्रेष्ठ भारत ने कहा कि महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ला ने इस दौरान उनका उद्घाटन भाषण में कहा।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. के अध्यक्ष ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि लोगों का ध्यान आकर्षित करना और समुदाय की जरूरतों के आधार पर उनकी जरूरतों का जवाब देना महत्वपूर्ण है। ग्रामीण उद्यमिता, सामाजिक उद्यमिता स्वच्छता और सामाजिक उद्यमिता को बढ़ावा देने वाले ग्रामीण जुड़ाव प्रकोष्ठ जैसे ग्रामीण उद्यमिता विकास प्रकोष्ठों

जैसे उच्चतर शिक्षा संस्थानों में 3 अलग-अलग कक्षों के गठन और कामकाज के माध्यम से रीति-रिवाजों, ग्रामीण दक्षताओं और पारंपरिक मूल्यों को समझने के लिए कौशल निर्माण और व्यावसायिक शिक्षा नई तालीम अनुभवात्मक शिक्षण प्रकोष्ठ कौशल दक्षताओं के निर्माण एम.जी.एन.सी.आर.ई. का फोकस क्षेत्र है। शैक्षिक संस्थानों के संकाय, छात्रों और अन्य प्रशासनिक

कर्मचारियों को सामाजिक, पारिस्थितिक, पर्यावरण, तकनीकी और आर्थिक विकास को बनाए रखने के लिए शिक्षा, अनुसंधान, नैतिक दृष्टिकोण के साथ सेवा के प्रावधान के माध्यम से एक सतत मानव विकास को बढ़ावा देने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए।

प्रतिभागियों ने दो गांवों का दौरा किया - एफ.डी.पी. के दूसरे दिन नंदोरा और पांचवें दिन सतोदा। एफ.डी.पी. गतिविधि मोड पर चला गया क्योंकि प्रतिभागी व्यक्तिगत और समूह व्यायाम गतिविधि में शामिल थे। एफ.डी.पी. के दौरान मामले की चर्चा

गतिविधि, गांवों का दौरा करने के लिए दृष्टिकोण डिजाइन, दौरा किए गए गांवों पर पेस्टल विश्लेषण का उपयोग किया

गया था। सभी प्रतिभागियों को दूसरे दिन चार टीमों में विभाजित किया गया और वे 3 दिनों तक टीम वर्क में लगे रहे। बाद में उन 4 टीमों को पिछले 2 दिनों के लिए 2 टीमों में लाया गया। एफ.डी.पी. प्रतिभागियों ने इस में सक्रिय रूप से भाग लिया और अब वे अपने क्षेत्र में 5 उच्चतर शिक्षा संस्थानों के साथ बैठक करने के लिए तैयार हैं।

बड़ौदा महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय
वडोदरा, गुजरात
19-24 सितंबर

प्रतिभागियों को 6 दिवसीय एफ.डी.पी. के बारे में उन्मुख किया गया था और एच.ई.आई. द्वारा सामुदायिक व्यस्तता पहल पर विचार निकाले गए थे। एम.जी.एन.सी.आर.ई. सेल और सस्टेनेबिलिटी इंडेक्स पैरामीटर्स पर चर्चा की गई। प्रतिभागियों ने एफ.डी.पी. के दौरान आगा खान ग्रामीण सहायता कार्यक्रम (भारत) - नेत्रंग तालुक में पट्टी गांव और झगड़िया में सेवा ग्रामीण का दौरा किया। एफ.डी.पी. के दौरान मामले की चर्चा गतिविधि, गांवों का दौरा करने के लिए दृष्टिकोण डिजाइन, दौरा किए गए गांवों पर पेस्टल विश्लेषण का उपयोग किया गया था। पिछले 2 दिनों के लिए सभी प्रतिभागियों को दिन 2 और 2 टीमों में पांच टीमों में विभाजित किया गया था। अपने संबंधित संस्थानों/विश्वविद्यालयों में स्थिरता प्राप्त करने के लिए प्रथाओं के कार्यान्वयन पर सक्रिय रूप से बात की गई।

प्रो. जगदीश सोलंकी - पूर्व डीन और सीनियर प्रोफेसर ने ग्रामीण विकास और सामुदायिक व्यस्तता से संबंधित अपने अनुभव साझा किए। साथ ही, उन्होंने खुद को सामने लाने के बारे में भी बताया जो हमें विकास और लीक से हटकर सोचने का मौका दे सकता है। मुख्य अतिथि

लोकसत्ता जनसत्ता

મહારાજા સયાજીરાવ યુનિવર્સિટી ખાતે ૧૯થી ૨૪મીના રોજ

સંસ્થાકીય સામાજિક જવાબદારીનું માર્ગદર્શન અને સામૂદાયિક જોડાણ માટેની સુવિધા વિષય પર સેમિનાર

श्री भास्कर जोशी - सामाजिक कार्य संकाय के अतिथि प्रोफेसर ने बहुमूल्य अनुभव साझा किए और ग्रामीण और शहरी समुदायों के बीच की अंतर को भरने के महत्व

पर भी प्रकाश डाला। गाँव के दौरों में से कुछ प्रमुख अवलोकन यह थे कि घरेलू और सामुदायिक

स्तर पर अपव्यय को कम करने के प्रयास किए जाते हैं और बायोगैस और गाय के गोबर का उपयोग न्यायिक रूप से किया जाता है ताकि उनके कार्बन फुट प्रिंट को कम किया जा सके। व्यक्तिगत घरों से निकलने वाले अपशिष्ट जल के प्रबंधन के लिए घरों के आसपास सोख्ता गड्ढों के लिए सुझाव दिया गया।

एफ.डी.पी. के समापन सत्र के एक भाग के रूप में, गुजरात सरकार में उच्चतर शिक्षा के संयुक्त आयुक्त श्री नारायण मधु ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की और बताया कि अभ्यास की जरूरतों के अनुसार सामाजिक जिम्मेदारी पर शैक्षिक कार्यक्रमों के डिजाइन और कार्यान्वयन की आवश्यकता है। एक शैक्षणिक संस्थान द्वारा कार्यान्वित परियोजनाएं भी सामाजिक रूप से लाभकारी होनी चाहिए और स्थिरता में योगदान करना चाहिए। उच्चतर शिक्षा संस्थानों को उनके सामने आने वाली वास्तविक जीवन की समस्याओं की पहचान और समाधान के लिए स्थानीय समुदायों के साथ गहन बातचीत को बढ़ावा देकर सामाजिक जिम्मेदारी और सामुदायिक व्यस्तता को बढ़ावा देने के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। बाद में उन्होंने एफ.डी.पी. प्रतिभागियों को भागीदारी का प्रमाण पत्र वितरित किया और सभी प्रतिभागियों और आयोजकों को बधाई दी।

एस.एस.पी.एम. मुंबई के गुरुकृपा कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, कल्याण, ठाणे, महाराष्ट्र
12-17 सितंबर

एफ.डी.पी. को डॉ. वैशाली वीर, उप निदेशक, महाराष्ट्र प्राथमिक शिक्षण परिषद, मुंबई और डॉ. पंकज वीर, सचिव, एस.एस.पी.एम., मुंबई ने मानद के रूप में सम्मानित किया। अतिथि वक्ता। प्रो. सुनीता मागरे, प्रोफेसर और प्रमुख, शिक्षा विभाग, अध्यक्ष, शिक्षा बोर्ड, मुंबई विश्वविद्यालय और शिक्षा में बोर्ड अध्ययन के सदस्य, मुंबई विश्वविद्यालय मुख्य अतिथि थे।

कॉलेज की प्राचार्य डॉ. विद्युलता कोल्बे ने अपने परिचयात्मक भाषण में प्रतिभागियों को कॉलेज के विजन और मिशन और कॉलेज द्वारा ग्रामीण विकास और जुड़ाव के क्षेत्र में किए गए प्रयासों के बारे में बताया। एफ.डी.पी. ने संकाय सदस्यों को सामाजिक जिम्मेदारी और जुड़ाव की अवधारणा और रणनीतियों से परिचित कराया और संकाय सदस्यों को निर्देशित किया कि वे अपने संगठन और सामाजिक जिम्मेदारी के लक्ष्यों के साथ कैसे तालमेल बिठाएं।

श्री बापूसाहेब डीडीविस्प्यूट कॉलेज ऑफ एजुकेशन, न्यू पनवेल, रायगढ़, महाराष्ट्र में एफ.डी.पी.
22-27 अगस्त

Adv. धनश्री चौगले प्राचार्य, बी.सी.ठाकुर लॉ कॉलेज, पनवेल और प्रो. (डॉ.) सुनीता मागरे प्रोफेसर और प्रमुख, शिक्षा विभाग, अध्यक्ष, मुंबई के शिक्षा विश्वविद्यालय में अध्ययन बोर्ड और शिक्षा में बोर्ड अध्ययन, मुंबई विश्वविद्यालय के सदस्य मानद थे। मुख्य अतिथि। सलाह कार्यक्रम का संचालन कॉलेज की प्राचार्य डॉ. सीमा कांबले ने किया। बुनियादी ढांचे का विकास, कृषि विस्तार और अनुसंधान के लिए सुविधाएं, ऋण की उपलब्धता, रोजगार के अवसर, शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वच्छता, और महिला सशक्तिकरण पर चर्चा की गई। पनवेल तालुका जिला पनवेल के शिवकर गांव और पनवेल तालुका के विचुम्बे ग्राम पंचायत का दौरा आयोजित किया गया।

पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़
29 अगस्त - 3 सितंबर

प्रो. दीप्ति गुप्ता, डीन, इंटरनेशनल स्टूडेंट्स ने एफ.डी.पी. को संबोधित किया और कहा कि एफ.डी.पी. में भाग लेना उन फैकल्टी के लिए फायदेमंद है जहां वे हैं कुछ अवधारणाओं, विचारों और गतिविधियों में डूबे रहना जो ज्ञान के दृष्टिकोण और दक्षताओं में परिवर्तन लाता है।

चंडीगढ़: पीयू में यूजीसी-एचआरडीसी की ओर से शनिवार को छह दिवसीय फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन किया गया। इसमें पीयू के 20 से अधिक प्रोफेसर्स ने हिस्सा लिया। डा. दीप्ती गुप्ता विशेष अतिथि रही। डायरेक्टर एचआरडीसी और सिंडिकेट मेंबर डा. जयंती दत्ता ने भी कार्यक्रम में शिरकत की ● डीपीआर

गुरहा, चंडीगढ़ से 17 किलोमीटर और मिर्जापुर (एसएएस नगर जिलों में माजरी तहसील का दौरा किया गया था। भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था में स्थानीय समुदायों के योगदान की सराहना करना और समुदाय के मूल ज्ञान और ज्ञान को महत्व देना सीखना एफ.डी.पी. के प्रमुख परिणाम थे।

गणपत विश्वविद्यालय (जी.यू.एन.आई.), खेरवा, मेहसाणा, गुजरात
19-24 सितंबर

अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने उद्घाटन सत्र में शिक्षा के भविष्य को आकार देने वाले कौशल की आवश्यकता पर विस्तार से बताया। डॉ. महेंद्र शर्मा, माननीय प्रो चांसलर और महानिदेशक जी.एन.आई. ने गणपत विश्वविद्यालय द्वारा की गई सामुदायिक सेवा के कई उदाहरण साझा किए जैसे लंबे समय तक नींबू रखने के लिए नींबू पैकिंग शुरू करने के लिए इंजीनियरिंग छात्रों द्वारा पहल, सैनिक स्कूल फॉर गर्ल्स, कृषि विज्ञान केंद्र, कोविद देखभाल केंद्र, परिसर में अक्षय ऊर्जा का उपयोग और भी बहुत कुछ। एम.जी.एन.सी.आर.ई. परियोजना समन्वयक ने शिक्षा प्रणाली में सलाह की विभिन्न भूमिकाओं पर चर्चा की। उन्होंने कई प्रासंगिक मूल्य आधार उदाहरण और कहानियां साझा कीं। उन्होंने क्रॉस ट्रांजेक्शनल विश्लेषण भी समझाया। डॉ. अमित पटेल, कार्यकारी रजिस्ट्रार और प्रो वाइस चांसलर, जी.यू.एन.आई. ने 'मेकिंग ए फॉरेस्ट-सॉल्यूशन टू सस्टेनेबल लाइफ' के केस स्टडी पर चर्चा की। श्री किरीट परमार, मुख्य कार्यक्रम अधिकारी, उन्नति, अहमदाबाद ने सामुदायिक व्यस्तता और उनकी भागीदारी की विभिन्न सीढ़ी के विभिन्न प्रासंगिक उदाहरण देकर प्रतिभागियों के साथ अपने अनुभव साझा किए। प्रतिभागियों ने मेहसाणा जिले के सनागनपुर गांव और कड़ा और कुनारिया गांवों का दौरा किया।

मेंगलोर विश्वविद्यालय, मंगलुरु, कर्नाटक
8-13 सितंबर

ವಾರ್ತಾ ಭಾರತಿ

ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕರಿಗೆ ಗ್ರಾಮ ಭಾರತದ ಪರಿಚಯ ಮುಖ್ಯ

"ग्रामीण जुड़ाव और स्थिरता की दिशा में संकायों की एक अभ्यास आधारित क्षमता निर्माण" पर 6-दिवसीय एफ.डी.पी. का उद्घाटन मैंगलोर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पी. सुब्रमण्य यदापदित्था द्वारा किया गया था। अन्य गणमान्य व्यक्तियों में मैंगलोर के शिक्षाविद और प्रबंधन सलाहकार डॉ. नारायण कायरकट्टे और डॉ. यशस्विनी बट्टंगया, विशेष अधिकारी और एफ.डी.पी. संयोजक, एमयू थे। प्रो. सुब्रमण्य ने "राष्ट्र पहले और चरित्र अवश्य होना चाहिए" पर जोर दिया। समुदाय आधारित अनुभवात्मक शिक्षा की अवधारणा को समझने के लिए कुडुबी समुदाय का दौरा किया गया।

मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर, कर्नाटक
2-7 सितंबर

ग्रामीण उच्चतर शिक्षा संस्थानों के लिए परामर्श कौशल और सुविधा कौशल पर एक दिवसीय फील्ड सगाई के साथ अद्वितीय एफ.डी.पी. का उद्देश्य कर्नाटक के विश्वविद्यालयों में सामाजिक कार्य प्रबंधन जन संचार और शैक्षिक संकाय के बीच ज्ञान और कौशल को समृद्ध करना है। संसाधन व्यक्ति लोगों की भागीदारी के

माध्यम से मूल स्तर पर अनुसंधान और समुदाय के जुड़ाव में व्यवसायी थे। प्रतिभागियों ने स्थिरता के इरादे से समुदाय को समझने के लिए विभिन्न पी.आर.ए. उपकरण सीखे। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मैसूर विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान संकाय के डीन प्रो. मुजफ्फर आजादी ने कहा कि सामाजिक कार्यकर्ताओं का काम इतना आसान नहीं है जितना बाहर से लगता है। सामाजिक कार्यकर्ताओं को अधिकारियों से एक बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ता है, खासकर जब वे सरकार की इच्छा के विरुद्ध संकटग्रस्त वर्ग की मदद करना चाहते हैं। नागवाला ग्राम पंचायत में ग्राम दौरा किया गया।

तिरुवल्लुवर विश्वविद्यालय, वेल्लोर, तमिलनाडु 19-24 सितंबर

प्रो. डॉ. टी. अरुमुगम कुलपति, तिरुवल्लुवर विश्वविद्यालय, मुख्य अतिथि थे जिन्होंने एफ.डी.पी. के मूल्यों की प्रशंसा की और टीम को आशाजनक परिणामों के साथ आने की सलाह दी। डॉ.आर. विजयरागवन रजिस्ट्रार, डॉ. एम.चंद्रन, परीक्षा नियंत्रक, डॉ.सी.धनदापानी निदेशक और डीन, डॉ.जी.योगनाधम प्रोफेसर और प्रमुख, अर्थशास्त्र विभाग अन्य गणमान्य व्यक्ति थे जिन्होंने एफ.डी.पी. प्रतिभागियों को संबोधित किया। वल्लीमलाई गांव के लिए क्षेत्र दौरा की व्यवस्था की गई थी।

शारदा कृष्णा होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज कुलशेखरम, तमिलनाडु 26 सितंबर - 1 अक्टूबर

एफ.डी.पी. का आयोजन उन्नत भारत अभियान, शारदा कृष्णा होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, कुलशेखरम और उन्नत भारत अभियान, गांधीग्राम ग्रामीण संस्थान, गांधीग्राम द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। के.वी. एजुकेशन ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. सी.के. मोहन की गरिमामयी उपस्थिति में सत्र का सफलतापूर्वक संचालन किया गया। डॉ. एन.वी. सुगथन, प्रधानाचार्य एस.के.एच.एम.सी., प्रो.के.रविचंद्रन, क्षेत्रीय समन्वयक, उन्नत भारत अभियान, गांधीग्राम ग्रामीण संस्थान, गांधीग्राम, प्रो. विवेक कुमार, सह-पी.आई., उन्नत भारत अभियान, राष्ट्रीय समन्वय संस्थान सी.आर.डी.टी., भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली प्रमुख वक्ता थे। अरकानाडु गांव, कदयालमुडु और आदिवासी गांव, पिचिपराई का दौरा क्षेत्र के दौरे के हिस्से के रूप में किया गया था।

यू.जी.सी. एच.आर.डी.सी. जे.एन.टी.यू. हैदराबाद 12-17 सितंबर

दो गांवों का दौरा किया गया - अमदापुर और चिन्नमंगलरम
कृषि बेरोजगारी धीरे-धीरे रोजगार के अन्य स्रोतों की ओर बढ़ रही है, मुख्य अवलोकन था।

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, यू.पी. 12-17 सितंबर

आई.क्यू.ए.सी. और स्कूल ऑफ आर्ट्स, ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज सी.एस.जे.एम.यू. द्वारा आयोजित सामाजिक कार्य शिक्षा में सामुदायिक व्यस्तता पद्धति पर 6 दिवसीय एफ.डी.पी. का उद्घाटन विश्वविद्यालय के प्रो-वाइस चांसलर प्रो. सुधीर कुमार अवस्थी ने किया। जबकि कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक ने ऑनलाइन

कार्यक्रम में शामिल हुए, इस एफ.डी.पी. के माध्यम से संघ के आकार लेने और उत्तर प्रदेश में ग्रामीण जीवन को बदलने के लिए आगे बढ़ने पर खुशी व्यक्त की। माननीय के मार्गदर्शन में सीएसजेएमयू के गोद लिए गए गांव मंधाना में गांव का दौरा किया गया। राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल और कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक ग्राम पंचायत सचिवालय- रामैल नगर, बिठूर का भी दौरा किया।

प्रमुख निष्कर्षों में से एक यह था कि भारत के ग्रामीण क्षेत्र की समस्याओं को केवल सामुदायिक व्यस्तता से ही हल किया जा सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए ग्रामीणों के पारंपरिक ज्ञान को नकारा नहीं जा सकता है। ग्रामीण भारत के लिए उनके ज्ञान को हालांकि एक बहुत ही स्थानीय संदर्भ में महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए।

यू.जी.डी.सी. एच.आर.डी.सी. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, यू.पी. 5-10 सितंबर

एफ.डी.पी. का उद्घाटन डॉ. एस.के. तिवारी उप निदेशक बी.एच.यू. और डॉ. प्रवेश कुमार श्रीवास्तव निदेशक बी.एच.यू. और मुख्य अतिथि डॉ. वीरेंद्र जायसवाल थे। स्थिरता, शैक्षिक सुधार और रोजगारपरकता की आवश्यकता पर चर्चा की गई। एफ.डी.पी. के क्षेत्रीय दौरे के हिस्से के रूप में जयापुर और नागेपुर गांवों का दौरा किया गया था। कृषि सुधारों की आवश्यकता प्रमुख खोज थी।

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद्

उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

5-1-174, शक्कर भवन, फतेह मैदान रोड, बशीरबाघ, हैदराबाद, तेलंगाना - 500004

दूरभाष: 040-23212120, फैक्स: 040-23212114, ई-मेल: admin@mgncre.in, वेबसाइट: www.mgncre.org

संपादक: डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार, अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई., डॉ.डी.एन.दास, सहायक निदेशक, अनसूया.वी, संपादक

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद् (एम.जी.एन.सी.आर.ई.) की ओर से डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार, अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा प्रकाशित और मुद्रित

RNI NO: TELENG/2021/81111